साठोत्तर हिन्दी – लोकधर्मी नाटकों का अनुशीलन

("दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" के परिपेक्ष्य में)

पृष्ठांक

अध्याय : 1 – विषय–प्रवेश	1-40
अध्याय : 2 – साठोत्तर हिन्दी लोकधर्मी नाटक : एक सर्वेक्षण	41-126
अध्याय : 3 – "दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में लोकजीवन एवं लोकसंस्कृति	127-157
अध्याय : 4 – "दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में लोकनाट्य शैली	158-193
अध्याय : 5 – "दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में मंचीय तत्व	194-227
अध्याय : 6 – समापन	228-232
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	233-239

अनुक्रम

अध्याय – 1

विषय – प्रवेश

भूमिका

मानव : साहित्य का सृष्टा

लोक : शब्द–प्रयोग, परिभाषा।

लोकसाहित्य : परिभाषा, अन्य पर्याय, प्रकार।

लोकधर्मी नाट्य : परिभाषा

लोकधर्मी नाट्य : स्वरूप – (अ) लोकजीवन से लोकधर्मी नाट्य का सम्बन्ध (आ) लोकसंस्कृति से लोकधर्मी नाट्य का सम्बन्ध।

लोकधर्मी नाट्य : प्राचीनता

लोकधर्मी नाट्य : प्रकार – (अ) धार्मिक नाट्य : (1) रासलीला, (2) रामलीला, (3) यात्रा नाटक, (4) यक्षगान, (5) कीर्तनियाँ, (6) अंकियानाट, (7) दशावतार, (8) छऊ, (9) तेरूकुत्तू, (10) भगत।

(आ) सामाजिक नाट्य : (1) ख्याल – (अ) नौटंकी ख्याल, (आ)जयपुरी ख्याल, (2) स्वांग – बहुरूपिया, भांड, (3) भवाई, (4) तमाशा, (5) विदेसिया

लोकधर्मी नाट्यों की विशेषताएँ

अध्याय – 2

साठोत्तर हिन्दी लोकधर्मी नाटक : एक सर्वेक्षण

भूमिका

1960 पूर्व लोकधर्मी नाटक : विहंगमावलोकन

लोकधर्मी नाट्य परम्परा : विभाजन रेखा

हिन्दी लोकधर्मी नाट्य परम्परा : इन्दरसभा

<u>भारतेन्दु और भारतेन्दु युग</u>

<u>पारसी रंगमंच</u>

<u>पृथ्वी थियेटर</u>

<u>स्वातंत्र्योत्तर लोकधर्मी – उन्मुख नाटक</u> – आगरा बाजार: (1954) हबीब तनवीर, अन्धायुग : (सितम्बर, 1954) धर्मवीर भारती ।

<u>साठोत्तर हिन्दी लोकधर्मी नाटक : एक सर्वेक्षण</u> – (1) नाटक तोता – मैना (1962) लक्ष्मीनारायण लाल, (2) शुतुरमुर्ग (1968) ज्ञानदेव अग्निहोत्री, (3)सुर्यमुख (1968) लक्ष्मीनारायण लाल, (4) पहला राजा (1969) जगदीशचन्द्र माथुर, (5) कलंकी (1969) लक्ष्मीनारायण लाल, (6)उलझी आकृतियाँ – समय सन्दर्भ (अक्तूबर, 1973) हमीदुल्ला, (7) बकरी (1974) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, (8) दशरथनन्दन (1974) जगदीशचन्द्र माथुर, (9) सिंहासन खाली है (1974) सुशीलकुमार सिंह, (10) दरिन्दे (1975) हमीदुल्ला, (11) रसगन्धर्व (1975) मणि मधुकर, (12) एक सत्य हरिश्चन्द्र (1976) लक्ष्मीनारायण लाल, (13)पोस्टर (1977) शंकर शेष, (14) सब रंग मोह भंग (1977) लक्ष्मीनारायण लाल, (15) बुलबुल सराय (1978) मणि मधुकर, (16) कुत्ते (1979) सुरेशचन्द्र शुक्ल "चन्द्र" ,(17) राम की लड़ाई (1979) लक्ष्मीनारायण लाल, (18) आला अफसर (1979) मुद्राराक्षस, (19) खेला पोलमपुर (1979) मणि मधुकर, (20) एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ (1979) शरद जोशी, (21)अन्धों का हाथी (1979) शरद जोशी, (22) उत्तर उर्वशी (1979–80) हमीदुल्ला, (23) भस्मासुर अभी जिन्दा है (1980) सुरेशचन्द्र शुक्ल "चन्द्र", (24) इकतारे की आँख (1980) मणि मधुकर, (25) कबिरा खड़ा बजार में (1981) भीष्म साहनी, (26) जादूगर जंगल (1981) राजेश जोशी, (27) रावणलीला (1983) कुसुम कुमार, (28) जो राम रचि राखा (1983) मृणाल पाण्डेय, (29) माधवी (1984) भीष्म साहनी, (30) रघुकुल रीति (1985) जगदीशचन्द्र माथुर, (31) आदमी जो मछुआरा नहीं था (1985) मृणाल पाण्डेय, (32) जैमती (1987)

हमीदुल्ला, (33) टंकारा का गाना (1989) बंसी कौल, राजेश जोशी, (34) शकुंतला की अंगूठी (1990) सुरेन्द्र वर्मा, (35) सुदामा दिल्ली आये (1992) हमीदुल्ला, (36) रामलीला (1997) राकेश

विशेष विवेच्य नाटक

दुलारी बाई (1978) मणि मधुकर

ख्याल भारमली (1981) हमीदुल्ला

निष्कर्ष

अध्याय – 3

"दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में लोकजीवन एवं लोकसंस्कृति

भूमिका

लोकजीवन : विवाह, नारी श्रृंगार स्वच्छन्द प्रेम, नारी शोषण, जनसंख्या का सवाल, खान–पान।

समाज में विभिन्न स्तर : लालची दुलारी, कटोरीमल व्यापारी, ननकू मोची, चिमना माँझी, पटेल सरपंच, गंगाराम जाट, फर्जीलाल झूठा गवाह, कल्लू भांड, मालदेव राजा, रानी उमादे, भारमली दासी, संकरिया नौकर, दरबारी कवि, पाखंडी स्वामी।

आधुनिक राजनीति का पर्दाफाश : पार्टी और नेता, ग्राम पंचायत, राजा का कर्तव्य, राजा का शौक (शिकार) चंदा इकठ्ठा करना।

लोकसंस्कृति : देवदेवताओं का स्तवन, मन्दिरों की प्रतिष्ठा, मिथक और अंधविश्वास : धार्मिक अन्धश्रध्दा, ईश्वर की कल्पना, अन्य लोकविश्वास, पाखंड, लोकखेल।

निष्कर्ष

अध्याय – 4

"दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में लोकनाट्य शैली

भूमिका

मंगलाचरण की विशिष्टता, सूत्रधार और अभिनेत्री का प्रयोग, भोपा–भोपी का प्रयोग, गायन–मण्डली का प्रयोग।

लोककथाओं का प्रयोग : पुतले की लोककथा, डंडे की लोककथा, पुश्तैनी जूतों की लोककथा, लालच बुरी बला है – लोककथा, भारमली की लोककथा।

लोकसंवाद और लोकभाषा : लोकगीत, लोकनृत्य, लोकवाद्य, शेरो–शायरी, कठपुतली का खेल पुतले (मुखौटे), पूर्वदीप्ति शैली, स्वप्न शैली, हास्य और व्यंग्य।

निष्कर्ष

अध्याय – 5

"दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में मंचीय तत्व

भूमिका

मंचसज्जा

दृश्य विधान

वेशभूषा

पात्राभिनय (पात्रों का क्रिया व्यापार)

प्रकाश योजना

ध्वनि व संगीत के औचित्यपूर्ण प्रयोग

रंगमंचीय प्रस्तुति एवं दर्शकीय संवेदना

निष्कर्ष

अध्याय – 6

समापन

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची